# बिश्नोई, काला हरिण और चिंकारा

[स्रोत: डाउन टू अर्थ](#)

## चर्चा में क्यों?

**हाल ही में बॉलीवुड अभिनेता सलमान खान को वर्ष 1998 में कथित तौर पर** [काले हरिण](#) (□□□□□□□ □□□□□□□□□□□) का शिकार करने के लिये बिश्नोई समुदाय की आलोचना का सामना करना पड़ा।

## बिश्नोई समुदाय के बारे में मुख्य बिंदु क्या हैं?

- **परिचय:**
    - बिश्नोई, **मुख्य रूप से एक हिंदू संप्रदाय** (ऐतिहासिक रूप से अंग्रेज़ों ने उन्हें मुस्लिम के रूप में वर्गीकृत किया था) है **जो पश्चिमी राजस्थान के थार रेगिस्तान** में रहते हैं।
    - **बिश्नोई समुदाय**, जिसकी स्थापना वर्ष 1451 ई. में जन्मे **गुरु जम्भेश्वरजी द्वारा दिये गए 29 सिद्धांतों के आधार पर की गई थी, यह समुदाय वन्यजीवों, विशेषकर काले हरिणों और चिंकारा के संरक्षक हैं।**
        - इनमें से **आठ सिद्धांत** जीवित प्राणियों के प्रति करुणा और जैवविविधता की रक्षा पर ज़ोर देते हैं।
        - अपने 29 सिद्धांतों के अतिरिक्त, **गुरु जांभोजी ने 120 कथन या शब्दों का एक समूह की भी रचना की**।
    - बिश्नोई समुदाय की पर्यावरण के प्रति सजगता प्रकृति के लिये उनके ऐतिहासिक बलिदानों से उपजी हैं, जिनमें वर्ष **1730 का खेजड़ी नरसंहार भी शामिल है।**
        - **वर्ष 1730 के खेजड़ी नरसंहार में, अमृता देवी** के साथ 363 बिश्नोईयों ने **महाराजा अभय सिंह (जोधपुर के महाराजा) के सैनिकों** से खेजड़ी के पेड़ों की रक्षा करते हुए अपने प्राणों की आहुति दे दी थी। समुदाय ने शिकारियों और अवैध शिकारियों से थार के वन्यजीवों की भी रक्षा की है।
- **संरक्षण:**
    - राजस्थान के रेगिस्तानी क्षेत्र में **वन्यजीव बिश्नोई समुदायों** के आसपास स्थित हैं, जहाँ समुदाय द्वारा सक्रिय रूप से वनस्पतियों और जीवों की रक्षा की जाती है।
    - बिश्नोई समुदाय विशेष रूप से **काले हरिण,** [चिंकारा](#), [ग्रेट इंडियन बस्टर्ड](#) **और खेजड़ी वृक्ष संरक्षण है**।

## काला हरिण कौन हैं?

- **परिचय:**
    - **काले हरिण (*Antilope cervicapra*) है, जिसे 'भारतीय मृग' (Indian Antelope)** के नाम से भी जाना जाता है। यह भारत और नेपाल में मूल रूप से स्थानिक मृग की एक प्रजाति है।
    - ये **राजस्थान, गुजरात, मध्य प्रदेश, तमिलनाडु, ओडिशा और अन्य क्षेत्रों** (संपूर्ण प्रायद्वीपीय भारत) में व्यापक रूप से पाए जाते हैं।
    - ये घास के मैदानों में सर्वाधिक पाए जाते हैं अर्थात् इसे घास के मैदान का प्रतीक माना जाता है।
    - कृष्णमृग एक **दैनंदिनी मृग (Diurnal Antelope) है अर्थात् यह मुख्य रूप से दिन के समय ज़्यादातर सक्रिय** रहता है।
- **मान्यता:** इसे पंजाब, हरियाणा और आंध्र प्रदेश का राज्य पशु घोषित किया गया है।
- **सांस्कृतिक महत्त्व: यह हिंदू धर्म में पवित्रता का प्रतीक है क्योंकि इसकी त्वचा और सींग को पवित्र वस्तु माना जाता है। बौद्ध धर्म में यह सफलता (गुडलक) का प्रतीक है।**
    - [वन्यजीव (संरक्षण) अधिनियम, 1972](#) अनुसूची
    - [IUCN स्थिति](#): कम चिंताजनक
    - [CITIES](#): परिशिष्ट III
- **चिंताएँ:**
    - आवास विखंडन, [वनों की कटाई](#), [प्राकृतिक आपदाएँ](#), अवैध शिकार।
- **संबंधित संरक्षित क्षेत्र:**
    - वेलावदार ब्लैकबक अभयारण्य- **गुजरात**
    - प्वाइंट कैलमिर वन्यजीव अभयारण्य- **तमिलनाडु**

- [ताल छापर अभयारण्य]- राजस्थान

## चिंकारा क्या हैं?

- चिंकारा, या भारतीय गज़ेल *([illegible])*, एक सुंदर मृग प्रजाति है जो भारत, पाकिस्तान और ईरान की मूल निवासी है।
- **संबंधित संरक्षित क्षेत्र: मेलघाट टाइगर रिज़र्व (महाराष्ट्र)।**
- संरक्षण स्थिति:
  - वन्यजीव संरक्षण अधिनियम 1972: अनुसूची I
  - IUCN स्थिति: कम चिंताजनक
  - CITIES: परिशिष्ट III

## UPSC सिविल सेवा परीक्षा, विगत वर्ष के प्रश्न

### [illegible]:

**प्रश्न. भारतीय अनूप मृग (बारहसिंगा) की उस उपजाति, जो पक्की भूमि पर फलती-फूलती है और केवल घासभक्षी है, के संरक्षण के लिये निम्नलिखित में से कौन-सा संरक्षित क्षेत्र प्रसिद्ध है? (2020)**

(a) कान्हा राष्ट्रीय उद्यान
(b) मानस राष्ट्रीय उद्यान
(c) मुदुमलाई वन्यजीव अभयारण्य
(d) ताल छापर वन्यजीव अभयारण्य

**उत्तर: (a)**

PDF Refernece URL: https://www.drishtiias.com/hindi/printpdf/bishnoi,-blackbuck-and-chinkara